भारतीय शास्त्रों से सिखावनियाँ

श्री भगवद्गीता से तीन श्लोक

'मन्दिर में रहो' सत्संग
श्रीकृष्णजन्माष्टमी व गोपालकाला के सम्मान में
१२ अगस्त, २०२०

अध्याय २, श्लोक ४७

तुम्हारा अधिकार कर्म करने में ही है, उसके फलों में नहीं। तुम्हारा उद्देश्य, कर्मों के फल की प्राप्ति कदापि नहीं होना चाहिए और कर्म न करने में भी तुम्हारी आसक्ति न हो।

अध्याय २, श्लोक २०

इस आत्मा का न कभी जन्म होता है, न ही इसकी मृत्यु होती है। इसका अस्तित्व सदैव है, और सदैव बना रहेगा। आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है। शरीर का नाश होने पर भी, इसका नाश नहीं होता।

अध्याय ६, श्लोक ५

मनुष्य को स्वयं अपने द्वारा अपना उद्धार करना चाहिए; मनुष्य को स्वयं को अधोगति में नहीं डालना चाहिए; क्योंकि मनुष्य स्वयं ही अपना मित्र हो सकता है और स्वयं ही अपना शत्रु हो सकता है।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।